''वमिन कुल्लि शैइन ख़लक़ना ज़ौजैनी लअल्लकुम तज़क्करून''

(अलज़ारियात आयत–49)

काएनात में शादी करने का दस्तूर

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान

जमादात में शादी का निज़ाम

आदिल व हाकिम और हिकमत वाले खुदा ने काएनात के मोहकम निज़ाम और पैदावार के मैदान में हर चीज़ का जोड़ा पैदा किया है। इस हक़ीक़त से काएनात की कोई चीज़ भी अलग नहीं है। इस नाक़ाबिले इन्कार हक़ीक़त की तरफ क़ुर्आन मजीद ने उस वक़्त कइ आयतों में इशारा किया था जब इन्सान का इल्म और उसकी तहक़ीक़ इस हद तक नहीं पहुँची थी। सूरए ज़ारियात की 49वीं आयत में बयान हुआ है। हस्ती के मौजूदात चाहे उनका ताल्लुक़ जमादात से हो या पैड़–पौधों से, जानवरों और इन्सानों से हो, सबको जोड़े की शक्ल में पैदा किया गया है।

यह अज़ीम ख़बर, इल्मी बात, वाज़ेह बयान वह भी तमाम मख़लूक़ात के बारे में............इल्मी तरक़्क़ी से सदियों पहले, मक्का व मदीने जैसे शहर में कि जहाँ एक लफ़्ज़ लिखने वाले और पढ़ने वाले का वजूद नहीं था, जहाँ किताब व मदरसा नहीं था। क़ुर्आन मजीद का मोजज़ा है और इसके अस्ली होने की पक्की दलील, इसके इल्मी होने की खुली हुई निशानी और नबुवत ख़तमुन्नबिय्यीन की सदाक़त का क़वी सबूत है।

काएनात के दूसरे मसाएल के बारे में क़ुर्आन मजीद में ऐसी आयतें मौजूद हैं कि जिनको देखकर आज के साइंसदाँ उंगलियाँ मुँह में दबा लेते हैं और हैरत में डूब जाते हैं। क़ुर्आन मजीद किसी भी इन्सान के लिए चाहे वह किसी भी मर्तबे व मन्ज़िलत का हो, अपनी हक़्क़ानियत के बारे में शक की गुन्जाइश नहीं छोड़ता है और इस बात को साबित करता है कि वह इन्सान की ज़िन्दगी के रास्ते पर चिराग़े हिदायत है।

''ज़ालिकल किताबु ला रइबा फ़ीही''

(सूरए बक़रह आयत–3)

उसने हर क़िस्म के जोड़े के अन्दर एक–दूसरे की मुहब्बत और एक–दूसरे के लिये कशिश पैदा की है ताकि यह कशिश और यह ताल्लुक़ एक ख़ास निज़ाम और मख़सूस हालात के तहत, चाहे निज़ामे पैदाइश में, चाहे निज़ामे शरीअत में, शादी करना, जोड़े बनाना और पैदाइश और नसल बढ़ने पर ख़ात्म है और पैदाइश के निज़ाम के बाक़ी रहने की वजह क़रार पाए और हर जिन्स व नौअ के मौजूदात ज़िन्दगी की लज़्ज़तों, हयात की मसररतों, अपने और दूसरे के वजूद से बाख़बर हो सकें।

जमादात की दुनिया में नसल के बढ़ने का रास्ता चाहे वह किसी भी सूरत में हो, एक माद्दे का दूसरे माद्दे से आपस में मिलने की सूरत में होता है जिसके नतीजे में तीसरा मद्दा सामने आता है जैसे आक्सीजन व हाइड्रोजन का मेल। यह दोनों ही गर्म और जला देने वाले हैं। इन दोनों गर्म और जला देने वाली गैसों की मिलावट का नतीजा ज़िन्दगी की ख़ुशनुमा दौलत पानी है या मिलने और जज़्ब हो जाने से बहुत से नतीजे

सामने आते हैं। या एक दूसरे के ख़िलाफ मिलाने से बेशुमार फायदे हासिल होते हैं। यह सब काम करने वाली ताक़त की हैरतअंगेज़ और आलमीन के परवरदिगार की रहमत का नतीजा है।

यही ताल्लुक़ जो दो या इससे ज़ियादा माद्दों के दरमियान बरक़रार होता है या जमादात के दरमियान एक–दूसरे से जो इश्क़ है यही इनकी नसल बढ़ने, और इनकी क़िस्म के बाक़ी रहने और निज़ामे पैदाईश और हस्ती की खूबसूरती की वजह है।

वाक़ई यह कितनी हैरतअंगेज़ ताक़त और कितना अज़ीम इरादा है कि जिसने दो जलते हुए और जला देने वाले माद्दों के दरमियान ऐसी उलफत और इश्क़ की ऐसी कैफियत पैदा कर दी है कि जिससे इन दोनों के मिलने से ठण्डा पानी और साफ व शफ़्फ़ाफ़ चश्मा और जोश मारते हुए नदी नाले और बड़े–बड़े दरया, अज़ीम समन्दर और रिम–झिम बारिश वजूद में आ गयी!!!

यह कितनी हैरतअंगेज़ ताक़त है कि जिसने मुख़तलिफ माद्दों के मेल से काली मिट्टी के सीने में पत्थर के दिल में हीरे पैदा किये हैं।

यह कैसा ज़बरदस्त इरादा है जिसने चन्द माद्दों को मिलाकर यमन के कानों में लाल अक़ीक़ और नीशापुर की ख़ाक में आसमानी रंग के फीरोज़े पैदा किये और ज़मीन में हैवानात के गौहर को मिलाकर इन्सान के काम आने वाली हज़ारों क़िस्म की चीज़ें पैदा करता है।

यह कितनी अज़ीम रहमत और मेहरबानी है कि जो मिट्टी और पत्थर को और दूसरे माद्दों को मिलाकर सोने चाँदी जैसी धात पैदा करता है और लोहा व सीमेन्ट पैदा करता है।

यह कौन सा इरादा व हिक्मत है कि जो माद्दों की तरकीब से अपने बन्दों को नेमतों से मालामाल करता है। यह कौन सा इरादा व हिकमत है कि जिसने सूरज व ज़मीन और आग के इस गोले के तमाम माद्दों और ज़मीन के माद्दों के दरमियान ऐसा इश्क़ व मुहब्बत पैदा कर दिया है कि सूरज के माद्दों की ज़मीन के माद्दों से मिलावट और मिलाप के नतीजे में खुद क़ुर्आन के बक़ौल इतनी नेमतें वजूद में आती हैं कि जिनका शुमार मुमकिन नहीं है।

खुदा वह है कि जिसने जमीन और आसमान को पैदा किया और ऊपर से पानी को नाज़िल किया है और इसके ज़रिये मेवों को तुम्हारी रोज़ी क़रार दिया है और कश्ती को तुम्हारे मातहत कर दिया है ताकि दरया में उसके हुक्म से चले और ज़मीन के ऊपर बहते हुए दरयाओं को तुम्हारे इख़्तियार में दे दिया है और चाँद व सूरज को, कि दोनों ही हरकत में हैं तुम्हारे लिये बना दिया है रात दिन को तुम्हारे मातहत कर दिया है और जो कुछ तुम उससे तलब करते हो वह तुम्हें देता है अगर खुदा की नेमतों को शुमार करना चाहो तो उसकी नेमतों को हरगिज़ शुमार नहीं कर सकते।

(सूरए आले इमरान आयत–191)

माद्दों की कशिश और माएल होना, मिलना और जज़्ब होना और उनके सही और ग़लत होने

का अन्दाज़ और पैदाइश व बढ़ोत्तरी–ए–नसल के लिए उनके दरमियान आशिक़ाना ताल्लुक़ ख़ास क़ानूनों की बुनियाद पर है और आदिलाना है। इस कशिश और मैलान में बेकार कुछ नही है और इस मुहब्बत और ताल्लुक़ में सुस्ती नहीं आती है। इस हसीन व आशिक़ाना दुनिया में लड़ाई व इख़्तेलाफ नहीं है और इस मुहब्बती शादी के बाद तलाक़ व जुदाई का कोई मतलब नही है। अगर इस लम्बी चौड़ी ख़िलक़त में इख़्तिलाफ व नाराज़गी और तलाक़ का मफहूम होता और जुदाई व अलगाव की गुन्जाइश होती तो हर तरफ ख़राब हरकतें और फसाद ही फसाद होते, हालात साज़गार न रहते बल्कि बिसात ही उलट जाती।

जमादात के हर माद्दे का मख़सूस वज़न और मुअय्यन फासला है और हर एक अपने हाल के मुताबिक़ हरकत व बढ़ोत्तरी की मन्ज़िलें तय कर रहा है और हर एक की दूसरे से मिलावट बराबर होने की बुनियाद पर होती है। माद्दे अपने मख़सूस और मुअय्यन निज़ाम से जुदा नहीं होते हैं और इस बेहतरीन निज़ाम के तहत जहाँ भी होते हैं अपने वजूद व क़ानून की रिआयत करते हैं।

''न सूरज चाँद तक पहुँच सकता है और न रात दिन से पहले हो सकती है और इनमें से हर एक अपनी–अपनी जगह और घेरे में तैरते रहते हैं।'' (सूरए यासीन आयत–40)

ऊपरी दुनिया के माद्दे वज़न, बनावट, लम्बाई, चौड़ाइ, गहराइ, रंग, सिफात और दूरी उनमें से सूरज व ज़मीन के दरमियान की दूरी जो कि 1500 मिलियन किलोमीटर है, में कभी कमी बेशी नहीं होती है। अगर यह दूरी ज़ियादा हो जाए तो ज़मीन की सारी चीज़ें जम जाएँ और अगर कम हो जाए तो ज़मीन की सारी चीज़ें जल जाएँ। इसमें खुदा का इल्म व अद्ल और उसकी न ख़त्म होने वाली हिकमत के अलावा कि जिसकी बुनियाद पर दुनिया का निज़ाम चल रहा है और कुछ देखने में नहीं आता है। समझदार, इन्साफ पसन्द, रौशन ख़याल, खुली आखें रखने वाले और पाकीज़ा निज़ामे हस्ती को दिल की आखों से देखते हैं तो वह खुशू व खुज़ू के साथ इसके पैदा करने वाले और इस हैरतअंगेज़ काएनात को बनाने वाले को याद करके तहेदिल से कहते हैं:–

''रब्बना मा ख़लक़्ता हाज़ा बातिला''

(सूरए आले इमरान आयत–191)

ऐ हमारे परवरदिगार! तूने इस हस्ती को बेकार नहीं पैदा किया है।

इसमें कोई शक नहीं है कि काएनात के ज़र्रे–ज़र्रे में बनावट, सजावट, हद और हक़ और हक़ीक़त कारफरमा है और तमाम मौजूदात के वजूद में खुदा के नाम और सिफात साफ हैं और उसके नाम व सिफात के ख़त इतने रौशन है कि जिन्हें अनपढ़ भी महसूस कर सकता है।

इससे भी ज़ियादा हैरतअंगेज़ बात यह है कि तमाम मौजूदात अपने ख़ास निज़ाम के साथ अपने महबूब व मक़सूदे परवरदिगार तक पहुँचने के लिए सीधे रास्ते पर चल रहे हैं।

''व अन्ना इला रब्बिकल मुन्तहा''

(सूरए नज्म आयत–42)

और बेशक सबकी आख़री मन्ज़िल परवरदिगार की बारगाह है।

□□□